पद्मप्रभ चालीसा

शीश नवा अरिहन्त को सिद्धन करुं प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम॥
सर्व साधु और सरस्वती जिन मंदिर सुखकार।
पद्मपुरी के पद्म को मनमन्दिर में धार॥

जय श्री पद्मप्रभु गुणधारी भविजन के तुम हो हितकारी।
देवों के तुम देव कहाओ, छट्टे तीर्थंकर कहलाओ।
तीन काल तिहुँ जग की जानो सब बातें क्षण में पहचानो।
वेष दिगम्बर धारण हारे, तुम से कर्म शत्रु भी हारे।

मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासा पर।
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो।
कौशाम्बी नगरी कहलाए, राजा धारणजी बतलाए।

सुन्दर नाम सुसीमा उनके, जिनके उर से स्वामी जन्मे।
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई।
इक दिन हाथी बंधा निरख कर, झट आया वैराग उमड़कर।
कार्तिक सुदी त्रयोदशि भारी, तुमने मुनिपद दीक्षा धारी।

सारे राज पाट को तज के, तभी मनोहर वन में पहुंचे।
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पूनम कहलाया।
एक सौ दस गणधर बतलाए, मुख्य वज्र चामर कहलाए।
लाखों मुनि अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों।

असंख्यात तिर्यञ्च बताये, देवी देव गिनत नहीं पाये।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, शिवरमणी को ली परणाकर।
पंचम काल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई।
जयपुर राज ग्राम बाड़ा है, स्टेशन शिवदापुरा है।

मूला नाम जाट का लड़का, घर की नींव खोदने लागा।
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभु की मूर्ति बताई।
मन में अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं।

तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत प्रेत को दूर भगाया।
जब गंधोदक छींटे मारे, भूत प्रेत तब आप बकारे।
जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वो करे किनारा।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अंधे भी आँखे पाते हैं।

प्रतिमा श्वेत-वर्ण कहलाए, देखत ही हिरदय को भाए।
ध्यान तुम्हारा जो धरता हैं, इस भव से वह नर तरता है।
अन्धा देखे गूँगा गावे, लंगड़ा पर्वत पर चढ़ जावे।
बहरा सुन-सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे।

मैं हूं स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा।
चालीसे को चन्द्र बनावे, पद्मप्रभु को शीश नवावें।

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के।

होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले॥